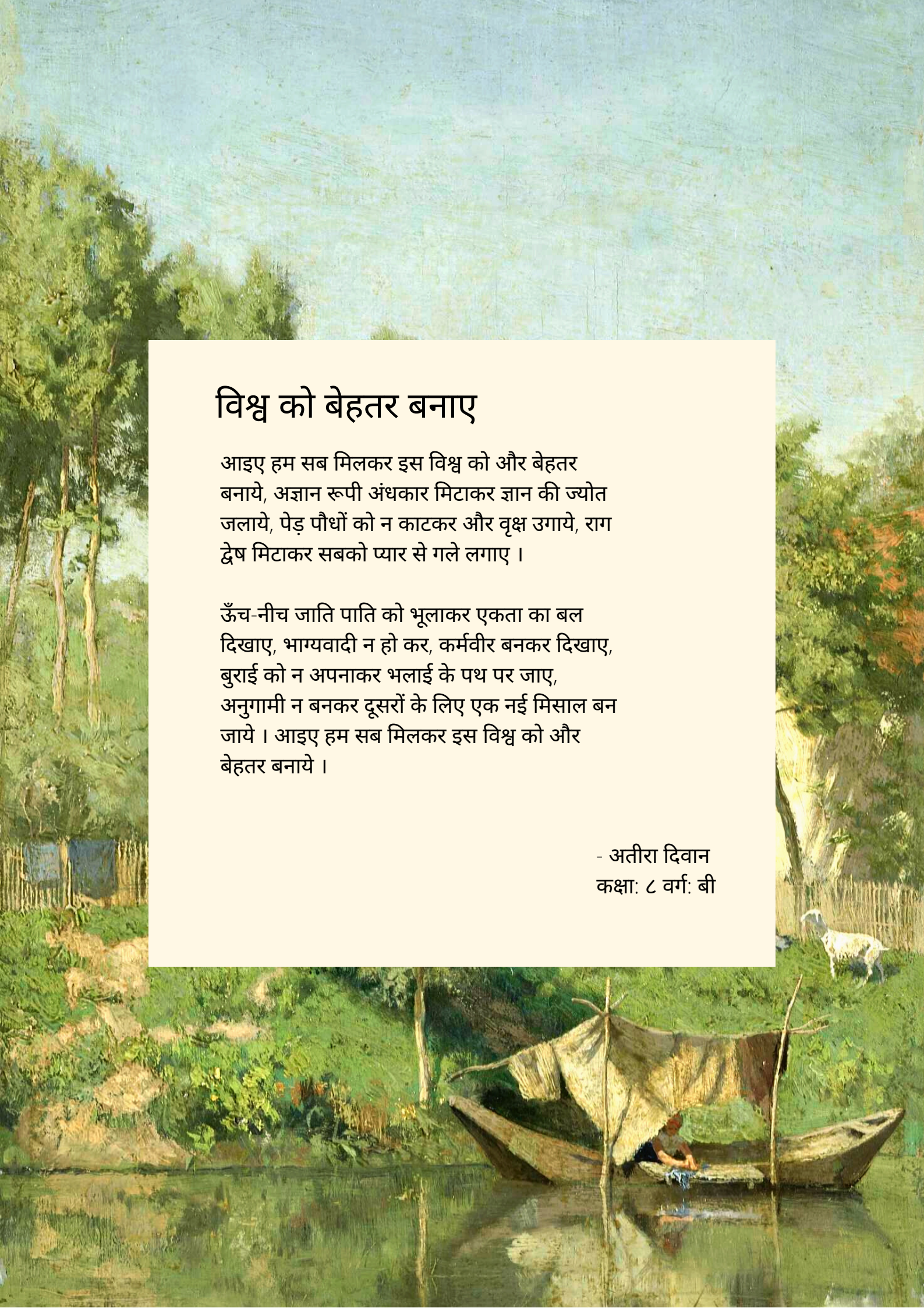

विश्व को बेहतर बनाए

आइए हम सब मिलकर इस विश्व को और बेहतर बनाये, अज्ञान रूपी अंधकार मिटाकर ज्ञान की ज्योत जलाये, पेड़ पौधों को न काटकर और वृक्ष उगाये, राग द्वेष मिटाकर सबको प्यार से गले लगाए ।

ऊँच-नीच जाति पाति को भूलाकर एकता का बल दिखाए, भाग्यवादी न हो कर, कर्मवीर बनकर दिखाए, बुराई को न अपनाकर भलाई के पथ पर जाए, अनुगामी न बनकर दूसरों के लिए एक नई मिसाल बन जाये । आइए हम सब मिलकर इस विश्व को और बेहतर बनाये ।

- अतीरा दिवान
कक्षा: ८ वर्ग: बी

कहा है वह जग हमारा?

था एक जग, खुशियों का गुलदस्ता सा, था एक जग,
अभूतपूर्व सा, अद्भुत सा,
था एक जग, जहाँ मोर नाचता, शेर दहाड़ता,
था एक जग, जहाँ वृक्षों का किला बना रहता,
था एक जग, प्रफुल्लित जीवो से भरा, था एक जग, जो हमारा आलय हुआ करता,
था एक जग, इंद्रपुरी का स्वरूप,
था एक जग, मनुष्य के सपनो से भरा, ममत्व से भरपूर।

पर कहाँ गया वह स्थान, स्वर्ग से भी अपूर्व?
कहाँ गई हँसी-मज़ाक़, चुटकुलों की गूँज?
बाढ़ आ गई, पेड़ जल गए, नदियाँ गई सूख,
पर्वतों ने भी पिघलती हुई बरफ़ के बहाए आँसू,
ईर्ष्या, घृणा, स्वार्थ, शत्रुता ने सबको डुबो मारा,
मनुष्य है पर मनुष्यता का हारा, कहाँ है वह जग हमारा?

जीवन की प्रतियोगिता में भाग लिए तो एक दूसरे का हाथ थामना भूले,
अपनों को ठुकराकर दौलत और शौहरत के पीछे भागे
अनाथाश्रम की चीखे और वृद्धाश्रम में नेत्रजल भरे,
मरणासन्न अवस्था में भिक्षुक सड़क पर बेसहारा पड़े,
बच्चे भूखे, माताएँ पीड़ित, गरीबी की महामारी गई फैल,
अकाल मृत्यु, जंग छिड़ गई, न जाने कितने अपने बन गए गैर,
सफलता की खोज में जीना भूला संसार सारा,
मनुष्य है पर मनुष्यता का हारा, कहाँ है वह जग हमारा?

समय बदल गया, यह जग भी,
हार गया मनुष्य अपने आप से ही,
क्या ला पाएँगे, उस गुलदस्ते को वापस कभी?
क्या बना पाएँगे, उस था' को 'है' अभी?
क्या ला पाएँगे, उस अनाथ बच्चे के मुख पर ख़ुशी ?
क्या ला पाएँगे, वह स्वर्गरूपी हरियाली?
ओ राही! देखो झाँककर अपने मन के अंदर,
क्या ला पाओगे अपने आप को वापस? क्या कर पाओगे अन्वेषण? क्या ला पाओगे उस भूस्वर्ग को, उस पृथ्वी को वापस ?
क्या बना पाओगे उस अतीत को अपना कल?

-द्वारा संजुक्ता बासू
१०. सी

आए हम सब मिलकर इस विश्व को और बेहतर बनाए

"पृथ्वी ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो हम सभी में समान है।" इंस्टाग्राम! ट्विटर! फेसबुक! इन शब्दों को सुनकर लगता है, संतोषजनक और रोमांचक है ना? ऐसा इसलिए है क्योंकि आजकल यह पीढ़ी केवल इन्हीं शब्दों और उनके उपयोग की आदी है। हम प्रकृति, मजेदार खेलों और अपनी प्यारी धरती के बारे में सब कुछ भूल गए हैं।

"नानी, मुझे एक कहानी सुनाओ ना !!" यह वाक्य अब लुप्त हो गया है। फैशन और बॉलीवुड स्टार्स में लोगों की दिलचस्पी ज्यादा है। मैं, खुद ऐसा ही एक लड़का था। फैशन, नाचना, ऐप्स में दिलचस्पी। लेकिन.. किसी के रोने ने मेरा दिल बदल दिया। मैं सड़क पर चल रहा था, पिछले महीने, रविवार को, जब मैंने कोने में किसी के रोने की आवाज़ सुनी। मैं वहाँ गया और यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि यह कौन था या क्या था। लेकिन मैं वहाँ किसी को नहीं देख सका। अचानक, मैंने एक नरम, फुसफुसाती आवाज़ सुनी जो मेरा नाम पुकार रही थी। मैं भ्रमित और डरा हुआ था। मैं चिल्लाया "यह कौन है? तुम कहाँ हो?" आवाज़ फुसफुसाई, "चिंता मत करो। मैं कोई ऐसा व्यक्ति हूँ जिसे वास्तव में आपकी मदद की जरूरत है।" मैंने पूछा कि उसे क्या चाहिए और वह क्यों रो रही है। उसने मुझे धीमी आवाज़ में कहा, "यदि आप मेरी मदद कर सकते हैं, तो आप दुनिया को बचा लेंगे। मैं बहुत बुरी तरह क्षतिग्रस्त हूँ। मुझे चोट लगी है। यह सब उद्योगों, प्रदूषण, पेड़ काटने और कई अन्य चीजों के कारण है। .. आओ.. मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि क्या होता है।" अचानक, एक बल मुझे अंदर खींच रहा था और यह मुझे कई उद्योगों और वायु प्रदूषण वाले स्थान पर ले गया। यह एक स्क्रीन की तरह था लेकिन मुझे कोई नहीं देख सकता था। फिर स्क्रीन पर जल प्रदूषण और पेड़ों की कटाई दिखाई गई। सभी स्क्रीनों में प्रत्येक क्रिया द्वारा किए गए नुकसान को दिखाया गया है। क्षति को देखते ही मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। यह पृथ्वी के लिए असहनीय था। तुरंत, मैं घर भागा और सोचता रहा कि मैंने क्या देखा है और इस सब को रोकने में मैं कैसे योगदान दे सकता हूँ। मुझे कई तरह के विचार मिले और मैंने पृथ्वी को बचाने के लिए काम शुरू करने का फैसला किया। अगले दिन, मैंने सोशल मीडिया को पूरी तरह से बंद कर दिया। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैंने स्कूल में कई प्रकृति-आधारित गतिविधियाँ शुरू कीं। मैंने हर रोज कई अलग-अलग जगहों पर एक पेड़ लगाया। मैंने पिछले एक महीने में बहुत योगदान दिया है। एक महीने बाद, मुझे धन्यवाद पत्र मिला। इसके अंदर एक बड़ा धन्यवाद था और उसने कहा, 'तुम्हारा दोस्त, पृथ्वी।' मैं बहुत खुश था कि मैं पृथ्वी को बचाने के लिए कुछ कर सका!

उस दिन मैंने जाना कि धरती कितनी कीमती है। हालांकि, दुख की बात है कि इसकी देखभाल न करने के कारण यह हमारे हाथ से फिसल रहा है। हमें अपनी धरती का जितना हो सके उतना ध्यान रखना चाहिए। हम इस नुकसान को बदल सकते हैं। आइए अब पहला कदम उठाएं! हम दुनिया को एक बेहतर जगह बना सकते हैं।

आस्था त्रिपाठी
७ डी

जीवन की उड़ान

रंग बिखेरे पन्नों पर,
दिल की बात है कह डाली,
छूने को आसमानों को,
ऊँची उड़ान है भर डली।
लाल, नीले ,पीले रंग,
मोह जाते हैं दिल को,
चल आगे बढ़ चलें,
कदम बढ़ा मंजिल को,
बढ़ते जाना, रुकना नहीं,
दृढ़ करे अपना विशवास,
सपनो को पूरा कर ले,
भरे सीने में उल्लास।

- धृति चथरथ